समकालीन कवि एवं पाठ निर्माण ।

(जिन्सी जोसफ, एच एस टी हिंदी, सेन्ट तेरेसास बी सी एच एस एस, चेंगरूर)

सारांश :- समकालीनता का सीधा सम्बन्ध उस सतत विकासपरक दृष्टि से है जिसके केन्द्र में मानव है। कविता अलुभव की दुनिया है, इसलिए उसका सम्बन्ध बाह्य वास्तविकता साथ ही कवि के आंतरिक व्यक्तित्व जीवन के साथ अत्यंत संपृक्त रहता है। अर्थति समकालीन कविता परोक्ष रूप से अपने समय की सामजिक, राजनीतिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक संरचना में जे अच्छी बातें ग्रहण करती है, स्वयं उसे आत्मसात करके विकसित किया है एवं नीच प्रवृत्तियों को खुलकर निष्कासन करती है। आज समसामयिक परिवेश में उपजी कविता सर्वसाधारण की आकांक्षाओं एवं समाज की विसंगतियों को प्रकट करने में नए प्रतीकों का चयन तथा आम- फहस परिवेश के पुनः सृजन करता है।

मूल शब्द :- समकालीन कवि, पाठ निर्माण, बाजार, कविता, समसामयिक सन्दर्भ

समकालीनता यथार्थ में अपने समय की महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ उलझना है, जो वर्तमान का सत्य होता है। समकालीनता का आशय अपने समय के प्रति पूरी तरह ईमानदार एवं सजग होने से है। महान लेखक धूमिल के अनुसार रूप, रंग और अर्थ के स्तर पर आज़ाद रहने के सामने बैठे आदमी की गिरफ्त में न आने की तडप, एक आवश्यक और समझदार इच्छा जो आदमी की आदमी से जोडती है, मगर आदमी को आदमी की जेब या जूते में नहीं डालती स्वतंत्रता की तीव्र इच्छा और उसकेलिए पहल उस पहल के समर्थन में लिखा गया साहित्य समकालीन साहित्य है। कहा जा सकता है कि समकालीनता का बोध वर्तमान समय का बोध है जिसमें जी रहे हैं, वह वर्तमान बोध आधुनिक बोध का एक अंग है।

वीरेन्द्र मोहन की राय में "समकालीन कविता यथार्थ की अनदेखी नहीं कर सकती। यहीं यथार्थ के कई-कई रूप हैं यह यथार्थ निरन्तर परिवर्नशील है। विगत यथार्थ और आज के यथार्थ में भी मूलभूत अन्तर है। उसी प्रकार विचार दर्शनों का यथार्थ कविता मात्रका यथार्थ नहीं हो सकता। ऐसा यथार्थ कविता को सीमित करता है। कविता के यथार्थ को सीमित नहीं किया जा सकता। इसलिए कविता केलिए यथार्थ का कोई एक रूप स्वीकार करना उसकी भूल होगी। थथार्थ के अनेक रूपों की पहचान कवि की आँख पर निर्भर है। कवि की आँख अंधेरे की पत की भेदकर यथार्थ की पहचान करती है। " 1

संक्षेप में समकालीनता का सीधा सम्बन्ध उस सतत विकासपरक दृष्टि से है जिसके केन्द्र में मानव है। कविता अलुभव की दुनिया है, इसलिए उसका सम्बन्ध बाह्य वास्तविकता साथ ही कवि के आंतरिक व्यक्तित्व जीवन के साथ अत्यंत संपृक्त रहता है। अर्थति समकालीन कविता परोक्ष रूप से अपने समय की सामजिक, राजनीतिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक संरचना में जे अच्छी बातें ग्रहण करती है, स्वयं उसे आत्मसात करके विकसित किया है एवं नीच प्रवृत्तियों को खुलकर निष्कासन करती है।

समकालीन कविता की पूर्व पीठिका बनाने में स्वर्गीय कवि धूमिल की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। धूमिल की कविता में संत्रस्त-पीड़ित मानव का दर्द अत्यंत मुखरित है जो अन्दर से टूटता हुआ जीने की यंत्रणा को वहन करता है। उसके लिए जीना उल्लास का साधन नहीं वरन् एक सजा है। कवि का उद्देश्य केवल यही है कि आज के आदमी की दुःख कथा का बयान करना

" शब्द किस तरह

कविता बनते हैं

इसे देखो

अक्षरों के बीच गिरे हुए आदमी को पढ़ो।

'भाषा की रात' कविता में धूमिल भाषा के विविध प्रयोजनों पर मानो गंभीर रूप में विचार प्रकट करते हैं। कभी भाषा मनुष्य के खिलाफ खड़ी की जाती है तथा कभी वह मनुष्य की रक्षा में उपस्थित है-

भाषा उस तिकड़मी दरिन्दे का कौर है

जो सड़क पर और है

संसद में और है।

धूमिल एक जगह भाषा के छद्म को पहचानते हैं। उस छद्म के मानद विरोधी प्रयोजन को भी व्यक्त करते हैं।

उत्तराधुनिक विमर्श वस्तुतः संस्थागत परिवेश एवं प्रभुतापूर्ण सत्ता की अधिसंरचना के विभिन्न प्रयोजनों पर आधारित है। "फूको सही प्रकार विभिन्न भाषा रूपों के आधार पर सता की शक्ति एवं प्रभावशाली सत्ता की अधिरचनाओं का विश्लेषण भाषा वैज्ञानिक चिंतन को नींव रखकर प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार पक्ष को मजबूत बनाने के लिए एवं मध्यवर्ग या निम्नवर्ग पर शासन चलाने के लिए विभिन्न चाल चलायी जाती है। शासक वर्ग युद्ध तथा आपातकाल में जनता को भटकाने हेतु विभिन्न नारों का प्रयोग करते हैं गरीबी हटाओ आदि) जिसका प्रत्यक्ष संबंध राष्ट्रभाषा या संपर्क भाषा से रहता है। फूको एवं हान्स गढोमर ने भाषा एवं शैली विज्ञान के ऐसे बहुआयामी प्रयोजनों को दिखाया है। कहा जा सकता है 'भाषा की रात' कविता में इस उत्तराधुनिक 'पाठ' का कहीं-कहीं समावेश दिखाई पड़ता है। संक्षेप में धूमिल ने प्रस्तुत कविता में क्रान्ति, शान्ति और अहिंसा के अर्थ बदलने का स्पष्ट निर्देश दिया है। उनका कहना है कि चमत्कारों के इस देश में एक के बाद एक क्रान्ति हो रही है। उदाहरणस्वरूप धूमिल ने 'हरितक्रान्ति' ''श्वेत क्रान्ति आदि का जिक्र किया है जिन पर से जनता का विश्वास एकदम उठ गया है।

यहाँ पर धूमिल की लम्बी कवीता- 'पटकथा' की चर्चा भी अत्यंत प्रासंगिक है जिसकी चर्चा के बिना धूमिल के काव्यात्मक विकास की चर्चा अधूरी रह जाएगी। प्रस्तुत कविता में हिन्दुस्तान के माध्यम से देश की वस्तुस्थिति को विशिष्ट नाटकीय धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। पूँजीवादी दिमाग के कारण सुधार के स्थान पर शोषण होता रहा। चुनाव के नाम पर भी छलावा हाथ लगी धीरे-धीरे उस वास्तविकता का बोध चेहरों को सही रूप में पहचाने से होता है। संसद और जनता का सही परिप्रेक्ष्य जानने के लिए कवि इस रचना को अनेक सन्दर्भों में प्रस्तुत करता है। काव्यनायक के शब्दों में अपना देश कैसा होता है? ''पटकथा' की पंक्तियों हैं

"यह मेरा देश है...

हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तक .

फैला हुआ.

जली हुई मिट्टी का ढेर है

जहाँ हर तीसरी जुबान का मतलब

नफरत है।

साजिश है

'पटकथा' में लेखक ने नागरिकों की स्वातन्त्र्योत्तर दशा आशा, मोहभंग एवं नियति का बेबाक चित्र खींचा है। इसमें आंतरिक जीवन एवं वाहा जीवन के बीच गहरा द्वन्द्व उभरता है तथा मूल्य-विघटन की स्थितियाँ भी मौजूद हैं।

सविता भार्गव आकाश समकालीन महिला कवियों में से सिद्धहस्त हस्ताक्षर है। उनका काव्य-संग्रह ' अपने में प्रेम और उसका प्रतिकार, रवासकर स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों को बेबाकी और कथ्यमय गरिमा के साथ अंकित किया गया है। प्रस्तुत संग्रह की एक छोटी कविता है-

ड्रामा कोर्स में

एक वाचाल वैश्या का अभिनय करते हुए

मंच पर मैं बके जा रही थी

माँ बहन की गालियाँ पूरी पृथ्वी एक मंच है

जिसमें पुरुष की यह आम भाषा है

बोलने के लिए जिसे

स्त्री को

वेश्या के अभिनय का

सहारा लेना पड़ता है।'

प्रस्तुत कविता स्त्रीविमर्श के लिए बेहतरीन मिसाल है। स्त्री का वर्चस्व एवं आत्मगौरव की रक्षा करने केलिए उसको गालियों का सहारा लेना पड़ता है। 'मैं' का रूप वस्तुतः क्रान्तिकारी महिला बनकर पुरुष केन्द्रित दुनिया पर हमला करने केलिए अपना सीना तन करके प्रस्तुत है जिसका सही दृश्य यहां प्रस्तुत है। समाज ने स्त्री जो दायरा निर्दिष्ट कर तय किया था, उसका उल्लंघन स्त्री पक्ष में रहकर करना आज की माँग है जिसकेलिए भाषा रूपी औजार का सहारा लेना है। स्त्रीपक्ष की प्रस्तुत द्वन्द्वात्मक भूमिका कात्यायनी की 'शोकगीत' नामक कविता में भी अत्यंत प्रखर रूप में समने आये थी। नाकामयाव जिन्दगी का उफन एवं पराजयबोध 'शोकगीत' में आक्रामक रूख तो नहीं ग्रहण करता, मगर अत्यंत संयमित भाषा में सहज रूप में प्रवाहमान तरंगिनी का रूप पाता है

जब एक उत्कृष्ट कविता

लिखने का समय था,

उस हारे हुए समय में भी

लिख रहे थे दीवारों पर नारे।

वर्तमान परिस्थितियों में बाजार की साजिश एवं बाजार ने किस प्रकार जनसाधारण की रुचियों को मोड़ दिया है, इस बारे में राजेश जोशी का लिखना है-

खिलौनों का बाज़ार

प्लास्टिक की नकली सन्दूकों, मशीन गनों, पिसालों टैंकों जैसे

खिलौनों से भर गया

बच्चों के अकेलेपन को एक नकली और हिंसक उत्तोजना

से भरने की एक भयावह कोशिश की जा रही थी। 2

कभी माता पिता भी इस और अनजान है कि इस उपभोक्तावादी युग में प्लास्टिक एवं नये खिलौनों के कृत्रिम माहौल में बच्चे किस प्रकार एक हिंसक उत्तेजना से भराये जा रहे हैं अर्थात मानव परिस्थिति एवं पुराने समाज का बने-बनाया ढाँचा तुरन्त ढहकर विलुप्त हो जाता है। परिस्थिति की जटिल संवेदनाओं एवं विडम्बनामों को श्री अष्टभुजा शुक्ल ने सहज रूप में जाहिर किया है-

यही लोग

पहले सहोदर जैसे थे

बाद में हो गये पट्टीदार जैसे

और अब

जैसे जासूस है। 3

इसप्रकार की कविता बाहरी और भीतरी दुनिया से प्रतिक्रिया स्वरूप ही जन्मती है। जीवनसिंह का 'उद्गार कि पुराना शहर खोखली हँसी नहीं हँसता' समान रूप में महान कवि पास ने लिखा- हमारे घर में जितने पुराने फर्नीचर एवं किताबें थीं, जब प्रस्तुत कमरा, सागर के झोंकों के आधात सहकर बरबाद किया जाता रहा उसे समीप के कमरे में जाया करते उसकी याद में यह बात कौंधती है कि बहुत समय तक उन लोगों का रहन सहन एक विशालकाय कमरे के अन्दर था पर उसकी एक दीवार पूर्णतः नष्ट हो चुकी थी। यही उपर्युक्त कविता का परिवेश है। कवि केलिए कोई पूर्व विचार धारा कोई विघ्न नहीं बनता। तभी सामने की दीवार भी वह चुकी है जिससे एक विशाल दुनिया से उनका विचार एवं भावनाएँ तादात्म्य स्थापित करती है।

कहने का मतलब है कि समकालीन कविता एसी अन्तर्द्वन्द की कविता है साथ ही वह जनमानस को भली मौति प्रकट करके गंगा-जमुना की भाँति द्रुतगामिनी बनकर भावी पीढ़ी केलिए एक समृह धरोहर के निर्माण में अनवरत काम कर रही है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. वीरेन्द्रमोहन का लेखः कविता के सौ बरस, पृ. 346

2. राजेश जोशीः चौंद की वर्तनी पृ.106

3. अष्टभुजा शुक्लः उसी बारे में (दुस्वप्न भी आते हैं) पृ.75 मंजुल उपाध्याय, अधातो काव्य जिज्ञासा, पृ.254